अनंत मिश्र

सूर्य से

हे सूर्य देवता!
कल इस तरह न आना
मेरे हिस्से का वादा
भुलाकर
आना इस बार
तो मेरे लिए
रेशमी धूप
और उजली इच्छाओं के फूलों की
डालियाँ
जरूर लाना।
रोज भूल जाते हो
देना
वादे के मुताबिक
और रोज कह देते हो
कल आऊँगा
तुम्हारे लिए जिंदगी
बेहतर लेकर,
हो सकता है तुम फिर भूल जाओ
पर इतना याद रखना
मैं फिर कहूँगा। □

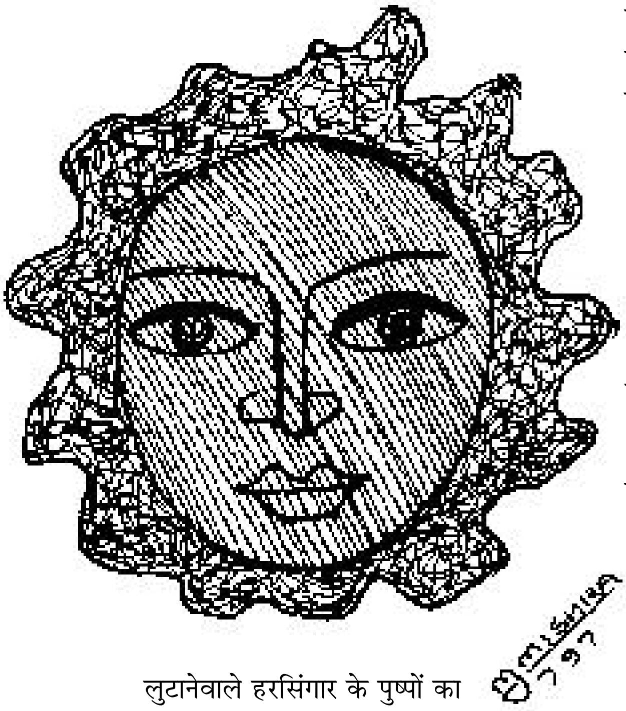

तुम्हारी देह की दुनिया के लिए गीत

हर शृंगार इस बार भी
सितंबर के अंत में
ढेरों खिले
कुछ जमीन पर धरे
और कुछ चुने गए
कुछ लोढ़ लिये गए अल सुबह
घंटे भर के अंदर
अपनी महक
सुंदरता और रंग
लुटानेवाले हरसिंगार के पुष्पों का
शीतकालीन
मौसमी जीवन
हर वर्ष दुहराया जाएगा
और हर वर्ष शायद
तुम्हारी देह की दुनिया में
उसी को गाया जाएगा। □

डरे हुए लोग

डरे हुए लोग
डरी हुई बस्ती में
डरे-डरे आए
डरे-डरे रहे
और एक दिन में नहीं
अनेक दिनों में
औरों के लिए जगह बनाने के लिए
चलते भी गए।
मैं भी आया उदास बस्ती में
लोगों को मैंने भरसक जमाया
डरने से बचने के लिए
उन्हें बहुत समझाया
पर डरे हुए लोगों ने
मुझे भी बहुत डराया
और इतना डराया कि
मैं उनमें शरीक हो गया
अब वे आश्वस्त हैं
और मैं डर-डरकर जी रहा हूँ
उनके दस्तूर के मुताबिक। □

अखबारी आदमी

वह चीखता ऐसे है
जैसे छप रहा हो
और जब हँसता है
तो उसे मशीन से
अखबार की तरह
छप-छपकर
लद-लद गिरते देखा जा सकता है,
वह इकट्ठा होता है
अपने वजूद में बंडल-का-बंडल
सबसे आँख लड़ाती बेहया
औरत की तरह
वह इतना प्रसिद्ध होता है कि
दिन भर में ही
पूरा-पूरा
फैल जाता है
आबादी पर,
अगले दिन वह फिर
हँसेगा, चीखेगा, गाएगा
प्यार करेगा
और दुहराएगा,
आदमी अखबारी है
अखबार में छपा रहता है उसका प्यार। □

रीडर—हिंदी विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर